

(2) श्री कोकिल कलरव

श्री कोकिल कलरव कृपानिधान साहिबनि जी सनेह रचिना
संस्कृत भाषा में आहे । महाराजनि उन जी कथा बाबा जनि खे
समुझाई हुई, उन जे आधार ते हीउ गीत बाबा जनि लिखाया
आहिनि ।

मंगलाचरण

जय जय मैगसि चन्द्र उदार ।

प्रेम परानिधि, भक्ति कल्पतरु, सब सद गुण आगार ॥

शील सिंधु साकेत सहचरि, सत्वन्ती सुकुमार ।

सन्त रूप होय अवनि अवतरी महिमा अपरम्पार ॥१॥

नीरस जीवनि सरस बनावन आये भक्ति भण्डार ।

अधम उधारण पतितनितारण हेतु लियो अवतार ॥२॥

जग मंगल सियराम नाम की करि अनहद झंकार ।

मोह नींद से जीव जगाए भए जग मंगलाचार ॥३॥

सत्य सनातन युगल किशोर को करि कीर्ति विस्तार ।

कथा कुंज मे बैठि रैन दिन गाये युगल विहार ॥४॥

श्रीकोकिल कलरव ग्रंथ बखाने प्रेम तत्व सुखसार ।

महिमा युगल महा मति वरणी जामें रस श्रृंगार ॥५॥

यह रस रत्न गुप्त कर राख्यो करि आज्ञा निरधार ।
इस रस ग्रंथ को पढ़ने का है उनको ही अधिकार ॥६॥
जाको सुवन समान प्यारे, साकेत की सरकार ।
वही पढ़ें सुने और गावैं युगल कुशल उर धार ॥७॥
रसिक शिरोमणि रसिक पुरन्दर राम रसिक रिझवार ।
रस की राशि रस के वेता नित रस वरषणहार ॥८॥
महाभाव मगना गरीबि श्रीखण्डि करि कोकिलि किलकार ।
विपिन विहारी युगल कुंवर के मिलन मोद दातार ॥९॥

(1)

कोटि कोटि प्रणाम श्रीसतीगुर वेदवती महाराज ।
शील सिंधु सुख धाम श्रीसतीगुर वेदवती महाराज ॥
साम आदि वेदों का गान निरन्तर रोम रोम जिनका करता है ।
जग मंगल जगदीश जगतगुर रघुवर की सुख भरता है ।
चरण कमल अभिराम-श्रीसतीगुर ॥१॥
उमा रमा शची आदि देवियों को नित उपदेश सुनाती है ।
सकल देव अंगना श्रद्धा से जिन पद शीश झुकाती है ।
नित गावत गुणग्राम-श्रीसतीगुर ॥२॥

श्रीजनकनन्दनी पाद पद्म की जै जै नित्य मानती हूं
वह मेरे हृदय का स्वामी पल पल बलि बलि जाती हूं ।

जाको कल्पतरु नाम-श्रीसतीगुर ॥३॥

विष्णु विधाता उमापति जिनके पद नित करत जुहार ।
मणि सम परम सुन्दर नख कान्ती फैल रही है प्रभा अपार ।

नूपुर ललित ललाम-श्रीसतीगुर ॥४॥

श्रीरामचंद्र के हृदय मन्दिर जो अविचल रूप से राजत है ।
अवध विहारी हो प्रेम पुजारी, दिल दुलराइ सुख साजत है ।

पिय मन पूर्ण काम-श्रीसतीगुर ॥५॥

सत्य जगत आधार स्वामिनि महिमा अमित अनूपा है ।

श्रीराममयी श्रीराम आराध्या महाभाव रसरूपा है ।

श्रीराम नयन विश्राम-श्रीसतीगुर ॥६॥

वे ही चरण गरीबि श्रीखण्डि बालि के परम सेव्य अरु इष्ट मनोहर ।
माखन और कमल से कोमल दिलि दुलही के अनूपम शौहर ॥

ध्याऊं आठों याम-श्रीसतीगुर ॥७॥

(२)

जै जै कौशल्या नैननि तारे, कृपा अम्बुनिधि प्राण प्यारे ।

भक्तनि के नित्य निवासी प्रभु भगवान रामचंद्र मधुर विलासी प्रभु

निज जन कारणे लीला विस्तारे ॥१॥

जिनि पद कमलनि ऋषि मुनि ध्यावे चिन्मय मकरंद सों लिव लावे

तिन को वन्दन मेरी वारं वारे ॥२॥

श्रीमैथिलि राघव साकेत स्वामी तिनि पद पद्मनि नित्य नमामी

वे ही हैं जीवन प्राण हमारे ॥३॥

माण्डवी भरत जू महारस राशी उर्मिलि लक्ष्मण सदा मृदुभाषी

श्रुति शत्रुघ्न चरण जुहारे ॥४॥

आदि कवि महर्षि लवकुश सतिगुर राम चरित रचियो मधुर तर

पद वन्दन हैं सुख सारे ॥५॥

एकादश प्रहर चरित रघुनन्दन रसिकनि जीवन संत उर चन्दन

कोकिल कलरव करुं उचारे ॥६॥

श्री (गरीबि) खण्डि संग्रह नाम प्यारा गरीबि उर रस वरषण हारा

सिय रघुवर के मधुर विहारे ॥७॥

(३)

प्रभात की अमृतमयी शुभवेला है आई ।
चारों ओर अरण्य में बड़ी शांति है छाई ॥
सुख से बीत चुकी अब तीन पहर यामिनी ।
अनिंद्रत भाव सो सो रही सिय स्वामिनी ॥
यद्यपि गहबर घोर भयंकर विपिन का स्थान है ।
पै निद्रा रहित श्रीलक्ष्मण पहरे पर सावधान है ॥
बोले अति मीठे वचन निज प्रभु जगाने के लिए ।
जागो अब त्रिभुवन धनी शशि उदित जाने के लिए ॥

(4)

गई बीत मंगल मयी रेन लहो सुखचैन महा अब जागो युगलवर ।
सिया राघव राजीव नयन प्रेम रस ऐन महा अब जागो युगल वर ॥
मलय समीर बहे सुखदायी पुष्प पराग उड़ाई
बासो के छिद्रों में प्रवेश करे मानो मुरलिया बजाई-अब जागो
इंगुदी वृक्षों ने स्वेत पुष्पों की रिमिझिमि झरी लगाई
मानो नगर कन्या खीलें लेकर कमलनि वर्षाई रे-अब जागो
कोकिल कू कू नाद करत है दरस प्यास अधिकाई

भीनी-भीनी गंधि फूलों की आवे मत्त मधुप मंडराई रे-अब जागो
रंग बिरंगी पंछी तरु पर करत मधुर किलकारी
मानो राज द्वार बंदीजन युगल कीरति विस्तारी रे-अब जागो
प्रभु मुख कांति फैल रही कानन झिलि मिलि जोति उजारी
लखि मुख छबि शशि अपनी शोभा युगलचुद्र पै वारी रे-अब जागो
पद्म खिले तामें कैदी भंवरा मुक्त भए सुख पाई
शैया छोड़ि उठे अब स्वामी जगतपति रघुराई रे-अब जागो
कमल नयन प्रभु बन जीवों ने निद्रा है अब छोड़ी
तव पद कमल दरस के कारण नैन दृष्टि है जोड़ी रे-अब जागो
जब तक प्रकाश निधि प्रभाकर नित रश्मि फैलाये
उनसे पहिले नींद त्यागो गौर श्याम मन भाय रे-अब जागो
रसाल डाल पै बैठा इक शुक बोलत म जुल बानी
जल ले आवो लाल लखन अब सुख से रैन बिहारी रे-अब जागो
सुनि लक्ष्मण के बैन बदन लखि विनीति हो कोकिलि बोली
युगल पाद पंकज में इनकी कैसी राति अनमोली रे-अब जागो
फिर बोली मेरी जननी जानकी बर की ओर निहारो
भोर भयो कोकिलि आदि कूजत होत रवि किरण पसारो रे-अब जागो
वृक्ष लता और दूरि के पर्वत सरोवर दीखने लागे

ठण्डड़ा समय निरखि चलने हित सकल बटोही जागे रे-अब जागो
जगदम्बा श्रीजनकनन्दनी जगत तात रघुराई
युगल किशोर के युगल चरण है मनर जन सुखदाई रे-अब जागो
वे सौभाग्यशील के भांजन इनका ध्यान जो धारे
त्रिभुवन ईश्वरी प्रेम सिद्धि तेहि मिलती हाथ पसारे रे-अब जागो
प्रेम निधि दम्पति तब जागे सुनि कोकिल कलबानी
गरीबि श्रीखण्डि चरण किंकरी करे सेवा सावधानी रे-अब जागो

(5)

सवेरे ही सियाराम भये, बन के बटोही ।
रात के भूखे रहे, न भोजन मिला कोई ॥
सूखे हैं अधर प्यास में स्वेद अंग है छाया ।
चढ़ा एक पहर दिन तो भी जल कण नहीं पाया ॥
ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा रवि वार था वही ।
प्यास में पूरण प्रिया प्रीतम सो यूँ कही ।
आर्य पुत्र ! रवि की रश्मि से मेरा तन पसीना हो रहा ।
बहूत व्याकुलु हो रही हूँ दुख न अब जाता सहा ॥
कहा है वह वृक्षावली जंह लक्ष्मण कुटी बनायेंगे ।
प्रिय नाथ ! कहो विश्राम का स्थल कहां अब पाएँगे ॥

सुनकर प्रिया की विकल वाणी रघुनाथ जी बोले वचन ।

वह दिख रही वृक्षावली जहां होगी कुटिया रचन ॥

(6)

देखो प्रिया मिथिलेशजा वह कदम्ब वृक्षावली ।

खिल रही है फूलों से, डारियां भांतिनि भली ॥

मयूर ताण्डव नृत्य कर आनंद से उछल रहे

प्रसन्न और गम्भीर है, बन की यह गहबर गली ॥१॥

परम पावन सलिल से भरपूर ये सरिता बहे

हरी दूब से हरा भरा कैसा रम्य तट सूरज लली ॥२॥

कैसे स्निग्ध ओ अनूपम नीले तरंग है उठि रहे

मधुर पुष्प पराग ले ठण्डी समीर है चली ॥३॥

मेघ ढकें आकाश को इस उपवन ने जीत लिया

कैसा यह दृश्य प्यारा है जहां होगी विहार स्थली ॥४॥

कलिन्द नन्दनी कण्ठ पै सुन्दर तपोवन है बड़ा

जहां बटू बैखानसों की तपस्या है फूली फली ॥५॥

जिनकी कुटी से सांवा को भोजन याचना करने लिए

तप मूर्ति वैराग्यवृत्ति आते लेकर कमण्डली ॥६॥

कमल वर्ग लोचन प्रिया लहरियों का नृत्य देखिये
कैसा रस आनंद है मृगनयनी प्रिया मैथिली ।।७।।
कदली दलों की श्यामता नयनों का रंजन करि रही ।
ज्यों बादलों में चन्द्र लखि खिले चकोर चख कली ।।८।।
बृह्मो लक्ष्मी से सुहावन ये तपसी आश्रम देखिये
जिनके दरस आनन्द सों चित वृति रस में रली ।।९।।
विरोध उद्दंडतादूर हो विघ्न निवृति हो गये
मैं पराधीन हो गया देखते ही मुनि पली ।।१०।।
महापुरुषों में है भरी कोई तीर्थों की विशेषता
अकथनीय आनन्द में मति मेरी है घुलि मिली ।।११।।
प्रिय प्राणनाथ के वचन सुनि महा प्रसन्न मैथिलि भयी
गरीबि श्रीखण्डि स्वामिनी बोली वचन अमृत डली ।।१२।।

(7)

मेरे प्राणनाथ प्यारे, देखो बसंत बहारी ।
नित समाज सहित आई, मन मथ की सवारी ।।
इस पवित्र बनस्थली को, अलंकृत कर दिया ।
रमणीयता निरखि के आनंद है अपारी ।।१३।।

तेरे शरीर सम ये सांवरी, यमुना है दिख रही ।
पुण्य सलिला भगवती को, मैं करती जुहारी ॥२॥
फिर देखि लक्ष्मण ओर को स्वामिनि ने यूं कहा ।
क्या वत्स फूल लेके, पूजोगे भानु दुलारी ॥३॥
अनन्यचेता लक्ष्मण, सुनि स्वामिनि वाणी ।
बोला विनीति भाव से सुनो साहिबि हमारी ॥४॥
जिनके चरण पराग के, भए मधुप ऋषि मुनी ।
अनुराग से उन्मति हो, करें मधुर गुंजारी ॥५॥
नितु ध्यावते हो पूजते, सदा दरस करत हैं ।
वह प्राणनाथ तेरा प्यारा अवध विहारी ॥६॥
इस लोक ओ परलोक में, उनके सिवाय मेरा ।
नहीं शरण्य कोई और है, यह बात सचारी ॥७॥
सुनि बैन ये लक्ष्मण के, मुश्काय किशोरी ।
करि पूजन रवि नन्दनि का उस्तति उचारी ॥८॥
जय यमुना रवि बछि, शशि बिम्ब सी स्वच्छ ।
मृदु हास की छटा समं, सुख सम्पति संवारी ॥९॥

गुह्य गुहाओं से घिरी है, कुवलय दलों से पूरण ।
दुध धार सी लहिरियों की है, शोभा न्यारी ॥१०॥
हे सौभाग्य दायनी माता, करुं वन्दन फूल चढ़ाके ।
करो कुशल मेरे नाथ का, दिन नाथ दुलारी ॥११॥
सिय राम फिर आनंद सों, कर कमल पकड़के ।
एक साथ घुसे जल में, दोऊ प्रीतम प्यारी ॥१२॥
समान मत गयंद के, जल क्रीड़ा करन लागे ।
जल उछालते परस्पर, कर कमल पसारी ॥१३॥
रस प्रेम के आवेश में, दोऊ मग्न हो गये ।
मानो दामिनी जलधर की है, केलि सुखकारी ॥१४॥
दोनो ललित लावण्य राशी, आनन्द हंस रहे ।
दोऊ केल कला पूरण, रस वेद विद्याधारी ॥१५॥
तीनों लोक में न ऐसा दाम्पत्य सुना देखा ।
अलौकिक है प्रेम युगल का, नितु गावें पुरारी ॥१६॥
प्रेम राज्य के ये राजा सिया राम मेरे स्वामी ।
नितु गरीबि श्रीखण्डि कोकिल, पद पद्म पुजारी ॥१७॥

दोऊ प्रेम के प्यासी बने, करते जल विहार हैं ।

केल कला उत्सक दोऊ, दोऊ नेह आगार है ॥

भीजि के दोऊ रस रंग में मधुर मधुर बतरावते ।

लखि परस्पर रूप को, नैन निमेष भुलावते ॥

कोट अवध के राज्य से आनंद यह अपार है ॥१॥

ले ले फूल सुहावने परस्पर सींगारते ।

तैर तैर तरंगो में शोभा को विस्तारते ।

जल पक्षों से खेलते, विनोदी राजकुमार है ॥२॥

कभी दिखाते यमुना शोभा, प्राणनाथ उमंग से ।

कैसी मोहिनी हे लहिरियां बह रहीं रस रंग से ।

अमल कमल खिलि रहे, झरणों की झंकार है ॥३॥

देखो देखो वे दूर से, लक्ष्मण बन में जा रहे ।

अग्नि को प्रज्वलित करे, काला मृग पका रहे ।

प्यारे अनुज के हीय में, उत्कटि अनूपम प्यार है ॥४॥

जम्बू तरुओं के कु ज ये, फलों से भरपूर है ।

जाकी छाया में पथिको की होती क्लांति दूर है ।

रंगा रंगी विहंगों की ललित ये ललिकार है ॥५॥

ठण्डी सुगंधी पवन चल कमलों को है छेड़ती ।

कन्दुक क्रीड़ा से कमल के सिर को है बिखेरती ।

कमल बनों में हंसों के कूंजन की किलकार है ॥६॥

विपिन दरस अहिलाद से प्रसन्न वदन प्रिया लखी ।

भगवान् श्रीरघुनाथ जू मन में भये अति सुखी ।

बोले कि हे गुण सागरी, पायों में जीवन सार है ॥७॥

हे मुग्धे प्रिया श्रीमैथिली, चंद्रवदन प्राण औषधी ।

मृगाक्षी प्राणेश्वरी हे कान्ते रस की निधी ।

श्रीजनक तनया जानकी तू मेरी प्राण आधार है ॥८॥

तू मेरी हृदय लक्ष्मी सुधा श्लाका नयन की ।

घनसार यों ठण्डा मिलन मूरति हो सुख चैन की ।

तेरी भुजा मेरे कण्ठ में गज मोतियों का हार है ॥९॥

सेवा सुशील सनेह से, मन मेरा है हरि लिया ।

विनय और प्रेम बेन से प्रेम ऋणी मुझको किया ।

इक पलक ना तुझको तजूं यह सत्य वचन सरकार है ॥१०॥

इस तरह आनंद से जल खेल करते रहे ।

दरस परस विनोद से कोट कोटिनि सुख दिये ।

सीआ राघव विहार पै मैगसि सदा बलहार है ॥११॥

(9)

नहाते नहाते नेह से बड़ी विलम्ब हो गई ।
प्राण प्यारी पार्थिवी निज नाथ सो बोलत भई ॥
कश्यप नन्दन भास्कर मध्य गगन है आया ।
अब तक न लक्ष्मण लाइला, भोजन पकाय लाया ॥
नृत्य करते मोर है कोयल कुहू कुहू कर रही ।
मैं तो बन सुषमा लखूं चाह है मन में यही ॥
ऐसा कहि गजगामिनी श्रीस्वामिनी जू चल पड़ी ।
झंकर सुनि के नूपरों की श्रीराम की मति अड़बरी ॥
विरह से शिथिलांग प्रियतम देखते ही रह गए ।
हा प्रिया ! मति जाइये, बेन ये बोलत भए ॥

(10)

ओ पार्थिवी प्राण प्यार मुझे छोड़ि कहां जाती ?
बन की बीहड़ गली लखि दिल मेरी है डराती ॥
तेरा इस तरह से जाना लगता नहीं सुहाना ।
रवि की ये तेज किरणें, सुकुमार तन तपाती ॥१॥
ये नारकेल छाया, विश्राम के न काबिल ।
यहां शिव सरूप ठण्डिड़ी यमुना में क्यों न आती ॥२॥

तेरे मुख कमल की वाणी कितनी मधुर महानी ।
जब देखती नयन भरि मानो सुधा वरषाती ॥३॥
तेरी छबि को जब ही देखे लगती न नयन निमेषे ।
अमरावती की देवियां तेरे आगे है लजाती ॥४॥
रघुवर यों कह रहे थे, नयन नीर बह रहे थे ।
हां ! हां ! जनक किशोरी मत जाओ प्रेम पाती ॥५॥
बन सुखिमा में मगनु हो परम हंस रूप स्वमिनि ।
गई घुस के गहवर वन में बन की बड़ाई गाती ॥६॥
विकसित अशोक तरुवर व्याकुलु हो श्रीराम बैठे ।
बोले कि हाय प्यारी ! विरह की पीड़ है सताती ॥७॥
प्रिया वियोग का दारुण दुःख क्यों मेरे सिर पै आया ।
प्रलय अग्नि सी ज्वाला है बिरह की जलाती ॥८॥
वे सूर्य चन्द्रमा सम है विष उगलि रहा ।
और मन्द मन्द वायु वज्र चोट है लगाती ॥९॥
फूल माल शूल न्याई है हृदय छेदती ।
ये चन्दन लेप आग की चिनगारियां चुभाती ॥१०॥
एक एक पलक सौ सौ कल्पों समान बीते ।
आशा से जी रहा हूं मेरे जीवन के साथी ॥११॥

अशोक तरफ देख के बोले अधीर रघुवर ।
तेरी ओ मेरी शोभा है एक सी लखाती ॥१२॥
तुम नयें कोपलों से लाल लाल हो रहे हो ।
मेरी निज प्रिया गुणों से कीरति है जगमगाती ॥१३॥
तेरे पास ये शिली मुख दौड़ दौड़ कर आते ।
मेरे उर पै विरह सेना तीखे बाण है चलाती ॥१४॥
तुम कान्ता लता मिलन से अशोक बन रहे हो ।
सशोक प्रिया बिन मैं प्रतिकूलिता दिखाती ॥१५॥
ऐसे वृलाप कर कर प्रिया ध्यान में मगनु हो ।
सिया राम के मिलन हित सिंग देवता मनाती ॥१६॥

(11)

विपिन से पीहर सम प्यार है प्यार है ।
प्रिया को बन लखि हर्ष अपार है ॥
जल से भीगी होने कारण कैसरि कीचि अंगनि लागी ।
नुपूर धुनी सुनि हंसो की मति पागी ।
हृदय पै कांपि रहा हार है हार है ॥१॥

चारों ओर पूंछ फैलाके मोर बहुत से नाच रहे ।

मधुर निनाद करि रस रंग राचि रहे ।

ऐसे बन में वैद्यलि विहार है विहार है ॥२॥

सुख की सद्म सियाजू स्वामिनि वेद नन्दिनी प्यारी है ।

सरल स्वभावा प्रिया हृदय उज्यारी है ॥

पिय उर सुभग सींगार है सींगार है ॥३॥

बड़े बड़े फूले फले तरुवर ताल तमाल हैं छाये रहे ।

मधुर सुगंधि पै मधुकर गाय रहे ।

मन्द वायूं का पसार है पसार है ॥४॥

गहबर विपिन देखके स्वामिनि भीरु भामिनी डराय गई ।

निगरोध बट की छाया में आय गई ।

यमुना की जहां पै बहार है बहार है ॥५॥

अद्भुत कामिनी है रवि तनया कानागुर जूड़ा राजे ।

लहिरियों के हाथ में गेंद कमल साजे ।

सिया देखि पायो सुखसार है सुखसार है ॥६॥

सनातन पथ पै स्थिति स्वामिनी श्रृंगार रस की मूरती ।

जीय में जागि रही राम की स्फूरती ।

उमा रमा करती जुहार है जुहार है ॥७॥

नैननि में है श्रीराम बसा और बैननि में श्रीराम है ।

हृदय मन्दिर में श्रीराम विश्राम है ।

गरीबि श्रीखण्डि की आधार है आधार है ॥८॥

(12)

यहां विपिन में घूम रही श्रीमिथिलेश दुलारी ।

वहां पुलनि पै पुकारते श्रीअवध विहारी ॥

यमुना प्रवाह शांत हुआ संध्या है आने वाली ।

पर आई अब तक लौटकर मेरी मानस मराली ॥

भूख और प्यास से कहीं विकल फिरती होगी ।

बीहड़ वनों में भीरु अकेली डरती होगी ॥

हे यमुने ! क्या तुमने मेरी प्राण प्यार देखी ।

हे शुभसती वे खेलती कमलों से विशेषी ॥

देखो ये राम उनके लिये वृत्ताप कर रहा ।

तेरे पुलनि पर आयके ये दुसह दुख मैं ने सहा ॥

हा मैथिली ! हृद्देश्वरी ! शील सनेह मणी ओ ।

तेरा नाथ रो रहा कंहा जनकेन्द्र जणी हो ॥

श्रीखण्डिमती के प्राणपती वेगि आइये ।

मुखी हुई मेरी मन कली को आ खिड़ाइये ॥

गहबर बनों में घुस श्रीराम सिया को ढूँढने लगे ।

आंसू से हृदय भीगा प्रिया प्यार में पगे ।

यमुना पुलनि पै टहल टहल बड़ी दीनता से रोये ।

भूमी पै बैठ अधीर हो मग जानकी के जोहे ॥

(13)

सुकुमारी सिया जू आओ मेरी प्राणनि प्यारी आओ ।

रोते प्राण है मेरे गुण गाय के तेरे मेरी हृदय दुलारी आओ ॥

तेरे सिवाय दीन ओ मलीन हो रहा हो रहा ।

जैसे दिन में चन्द्र क्षीण हो रहा हो रहा ।

मेरी प्रिया पद्म नैन तेरे बिना नहीं चैन,

कहां हो कहां हो मुझे बतलाओ ॥१॥

जनक नृप कुलमणी विलम्ब ना करा ना करो ।

रूपसुधा को पिलाय दुख हरो दुख हरो ।

मन कमल राजहंस सकल सती अवितंस,

मेरी वृह अग्नि को बुझाओ ॥२॥

यमुना तट के वृक्षों ! मैं तुमसे पूछता तुमसे पूछता ।

शशी मुख पार्थिवि का दो पता दो पता ।

जिनके चरण लाल लाल, तुम्हें किया है निहाल,

मुझे उनका संदेश सुनाओ ॥३॥

चम्पा पुष्प के समान अंग कांति है कांति है ।

नैन चकोर के लिये चंद्र भांति है भांति है ।

कुंकुम चरचते अंग, ठण्डी जैसी नभगंग

मेरा हर्ष हुल्लास बढ़ाओ ॥४॥

चन्द्रमा उदय हुआ शरद शरवरी शरद शरवरी ।

सदा अनुकूल प्रिया कंहा जा दुरी जा दुरी ।

भोजन अनेक प्रकार किए लक्ष्मण तैयार

मेरे संग मिल भोजन पाओ ॥५॥

हे हंस सारसो प्रिया है कहां है कहां ।

वेगि ही बताओ जाऊं मैं वहां मैं वहां ।

मेरी जीवनि संगिनी बन छबि में मगनि,

उड़ि उसको बुलाकर लाओ ॥६॥

छुपी क्यों हो वृक्षों में देखि लिया देखि लिया ।

बेलती नहीं हो क्यों रोष किया रोष किया ।

क्यों मुझको छोड़ा, मुख कमल मोड़ा,

मेरा दोष आके समुझायो ॥७॥

बाणबिंधे पक्षी ज्यों मैं तड़फता मैं तड़फता ।

हा प्रिया ! हा प्रिया ! रोम रोम जल्पता जल्पता ।

कभी गिरिता धरणि, जाउं किसकी शरणि,

मोहि आकर धीर धराओ ॥८॥

इहां उहां दूँढि राम हार गये हार गये ।

धीर धारि लखण सम्भाल लिये सम्भाल लिये ।

बोली कोकिलि वचन, अब जाऊं मैं दूँढन स्वामी

इतना न अब घबराओ ॥९॥

(14)

देखि अधीर रघुवर को कोकिल व्याकुल हो चली ।

गहबर बन वीथियों में चली दूँढने श्रीमैथिली ॥

दूर से देखी स्वामिनि यमुना तट से आ रही ।

कभी कौतुक रुकती है कभी शीघ्र चरण बढ़ा रही ॥

शीघ्रता से श्रीजू चरणनि आय शीश झुका लिया ।
रघुनाथ की विरह व्यथा का विस्तार से वर्णन किया ॥
वेगि प्रियतम से मिलो प्रिया, अब विलम्ब न कीजिए ।
प्रिय प्यासे नैन चकोर को मुख चंद्र दर्शन दीजिए ॥
मैं जाके अब धीरज धराऊं, जीजी आप जल्दी आइयो ।
करुणा की मूरति किशोरी, प्रेम सुधा वर्षाइयो ॥
ऐसे कह गद्गद् चित से दौड़ती आई वहां ।
हा सिया हा हा सिया कह विलपते रघुवर जहां ॥
जयति जय श्रीजानकी की बोलि के कोकिल कहा ।
शोक को त्यागो प्रभू देखो जीवन साथी आ रहा ॥

(15)

कोकिल रूप साईं प्यारे हो आइ मीठे मीठे वचन उचारे ।
युगल मिलावण हारे हो, मीठे मीठे वचन उचारे ॥
हे करुणा वर्णालय रघुवर, तुम जिनके गुण गाय रहे ।
उझकि उझकि जांका मग जोवत, आंखिनि आसूं वहास रहे ।
वह आती है पास तुम्हारे हो, आइ मीठे मीठे ॥१॥

बहुत वेर से यमुना तट पर हंसनि के संग खेलती थी ।

दिव्य अंगों की अद्भुत ज्योती चांदनी के सम फैलती थी ।

सब पुलनि भये उज्यारे हो, आइ मीठे मीठे ॥२॥

मंद मंद गति से श्रीजू स्वामिनि जब इस ओर गमन किया ।

हरित मणी पद दुरिवा जान के मृग शिशुओं ने चुम्बन किया ।

तिन पै दया उर धारे, हो आइ मीठे मीठे ॥३॥

मंद मुस्कान से मुख सौरभ पर मधुकर आ मण्डराता था ।

कर बैठा शुक जामुन जान के रह रह मुख फैलाता था ।

देखि कौतुक तुमहि सम्भारे, हो आइ मीठे मीठे ॥४॥

बहुत विलम्ब के कारण डर के कोप तेरे की सुधि आती है ।

कठोर नयन से देख रहा पिय ऐसा समुझि सकुचाती है ।

रुकती है बारे बारे, हो आइ मीठे मीठे ॥५॥

कातरता वशि कमल कली के दोऊ कर जुड़ जाते हैं ।

भोरे भाव से वन्दन कर कर प्रीतम तुम्हें मनाते हैं ।

चलि करो प्रिया सत्कारे, हो आइ मीठे मीठे ॥६॥

कोकिल बानी सुनि रससानी दशरथ नन्दन हुलसाये ।

आतुरता से आगे चलकर सघन लता कुंजनि आए ।

तहां छिप छिप प्रिया निहारे, हो आइ मीठे मीठे ॥७॥

रम्यलता में श्याम छटा लखि, बोली श्री मैथिलि राणी ।

मेरी ओर कौन है झांकता, कोमल दृष्टि है सुख सानी ।

रूप अनंग लजावन हारे, हो आइ मीठे मीठे ॥८॥

खिली खिली कोमल नील कमल की पंखड़ियां सब श्याम छबी ।

शंकर शीश मुकुट शशि के सम अंग अंग में हैं कांति फबी ।

श्रीखण्डि मण्डन सुकुमारे , हो आइ मीठे मीठे ॥९॥

आय समीप मिले दोऊ नागर, रस सागर भये प्रेम विभोर ।

विरह विकलता दूर भये दोऊ देखत हैं ज्यों चन्द्र चकोर ।

सदा मिले युगल सरकारे, हो आइ मीठे मीठे ॥१०॥

मिल बैठे दोऊ फूल सिंहासन कोकिल फूल न जात कही ।

देती मुबारक मधुर कंठ से रस रंग की है सरित बही ।

नित गरीबि श्रीखण्डि बलहारे, हो आइ मीठे मीठे ॥११॥

(16)

तब मधु फलों की वारुणी लाल लखण लाये ।

ओ घृत पूरण गरमागरम स्वादिष्ट भोजन बनाये ।

यमुना जल के कमल फल अति ही सुहाये ।

युगल भोजन के लिए सानुराग पकाये ॥

मिलि बैठे यमुना पुलनि पै तीनों पथिक प्यारे ।

प्रभु प्रसन्नता के लिए लखण वचन उचारे ॥

श्रीस्वामिनी पद नख शिखा किसी वनदेवी ने पाई ।

दिव्य कांति देखि उमंग से निज शीष लगाई ॥

शोभा बढ़ी तत्काल ही प्रभू, चन्द्रचूड़ बन गई ।

अन्य वन देवियां भी देख के अभिलाष कर रहीं ॥

हर्ष पूर्ण वाक्य सुनि लक्ष्मण के रसीले ।

गद् गद् हुए श्रीराम प्रिया प्रेम वसीले ॥

प्रीतम का हर्ष देखि के भई मुग्ध स्वामिनी ।

प्रेम चितवन से विलोकत वदन विधु वर भामिनी ॥

ज्येष्ठ मास के अंत में ज्यों श्याम घटा छाई ।

दिन गरमी के ढक जाते हैं त्यों श्रीजू हर्षाई ॥

सस्नेह भोजन परस के श्रीजू मधुर बैन बोली ।

अति श्रद्धा से देवर बनाये ये ताम अमोली ॥

बड़ी प्रीति से भोजन किया श्रीसीयाराम लखण ने ।

बलहार कोकिल जाती मधुर हंसण में ॥

राज रहे हैं राज रहे हैं दोऊ पुष्प शैया प्यारे ।
जनक नृपति की परम दुलारी दशरथ राज दुलारे ॥
प्रिया वदन पै प्रीतम प्रभु की अपांग चितवन वर्षे ।
परम सौभाग्य और जीवन का फल जानि प्रिया मन हर्षे ।
पिय अनुराग ओ ससार सुखों का है रस श्रृंगारे ॥१॥
प्रेम प्रफुल्लित हो हृदय से बोले श्रीरघुराई ।
यह सुन्दर बन हम लोगों हित भये परम सुखदाई ।
ठण्डिड़ी छाया मधुर मधुर जल रसिकनि योग्य आहारे ॥२॥
पुण्य प्रताप से मिलता है प्रिये, सत्पुरुषन सत्संग ।
जिनकी निःछल निर्मल वृत्ति लखि बढ़त है प्रेम उमंग ।
धन्य घड़ी वह धन्य दिवस जब मिलें सन्त सुखकारे ॥३॥
प्रिया कहा इस शांति विपिन में सुन्दर तपसी राजें ।
चारों ओर वेद मंत्रो की मधुर धुनी गाजे ।
सन्त दरस ओ वेद श्रवण से होता हर्ष अपारे ॥४॥
प्रिया वचन सुनि प्रभु प्रसन्न मन बोले गिरा सुहाई ।
तुम मेरे प्राण तुमहीं मम जीवन तुम मेरे नैन जुन्हाई ।
तेरे मुख के बोल मनोहर अमृत वरषण हारे ॥५॥

तेरी कबरी प्रिय पुष्पों की पराग बरस रही ।

कंकण धारी कर कमलों की छबी न जात कही ।

विवाह समय से पकड़ा है यह सुधा पात्र सुख सारे ॥६॥

स्वर्ण वृक्ष शाखा सम भुज का पुष्प है कर कमनीया ।

विदेह दम्पति ने अपने हाथों मुझे था अर्पित किया ।

तब से सुख देते हैं तेरे हस्त कमल रतनारे ॥७॥

प्रिय कर कमलों के सुख स्पर्श से प्रिया मन ही मन सुख माना ।

श्रीरामराज्ञी का वदन कमल हुआ बाल सूर्य के समाना ।

श्रीस्वामिनि के सकल अंगों में सात्विक भाव संचारे ॥८॥

प्रेम विवश बोली प्रिया प्रीतम तव कर स्पर्श कैसा ।

सुख है या दुःख मोहक निद्रा अद्भुत है रस जैसा ।

चैतन्य चकरा रहा हर्ष से नयननि चढ़े खुमारे ॥९॥

तब गद् गद् हो कोकिल बोली सतीगुर वेद कुमारी ।

आपके चारों ओर हो रही मधुपनि धुनि सुखकारी ।

मानो शिष्य श्रीसतिगुर से सीख लें वेद उचारे ॥१०॥

तुम ही धन्य हो माननीय हो तुम सौभाग्य सुखराशी ।

तुम्हारे प्रेम अमिय बैननि हित नित प्रीतम अभिलाषी ।

जय जय जनक नन्दिनी मैया सुर मुनि सन्त पुकारे ॥११॥

प्रीतम उन मन्दिर की देवी, प्रीतम नैननि ज्योती ।

तुम्हारे अनूपम गुण मेरी स्वामिनि, पिय हिय हार के मोती ।

गरीबि श्रीखण्डि तेरे गुण गावत निशि दिन सांझ सकारे ॥१२॥

(18)

निरख गगन की ओर श्रीरघुवर बोले वचन उदारा ।

देखो प्रिया कैसे चमकत है नभ में चन्द्र उज्यारा ॥

जैसे हरि मन्दिर में लक्ष्मी यमुना में कमल खिले ।

रजत पिंजर में हंस विराजत राज सिंहासन नृप भले ॥

जैसे मम हृदय पै प्यारी तुम शोभा हो पाइ रही ।

तैसे नभ में शशि शोभत है चांदनी है सरसाइ रही ॥

अन्य मना लखि प्राण प्रिया को प्रभु बोले जनक किशोरी ।

क्यों अचेत सी हो रही भामिनि है विरती कह ओरी ॥

जल से निकले कमलों सम क्यों नेत्र कमल मुरझाया ।

मेरे विचार से मात पिता का स्मरण तुम्हें है आया ॥

क्यों न होइ स्मृति पीहर की पीहर सबको प्यारा ।

विशाल नैनी सत्य बताओ क्या है आशय तुम्हारा ॥

प्यारी मधुर सनेह से भीनी सुनि प्रीतम की बानी ।

वीणा से अति बोल रसीले बोली रघुवर राणी ॥

मेरे प्रिय भाषी प्यारे, तेरे मधुर बैन है मन भाये ।

मन मन्दिर उज्यारे, तेरे मधुर बैन हैं मन भाये ॥

धीर गम्भीर मेघ रव के सम श्रवण सुखद हैं बोल ।

जिनके सम नहि तीन लोक में कोई शब्द अमोल ।

रस वरषणहारे, तेरे मधुर बैन हैं मन भाये ॥१॥

आपने ठीक कहा है स्वामी मेरा चित पहचाना ।

कालंदी कूल के लीला ललित बन लागें पीहर समाना ।

जगे नैहर नेह भारे, तेरे मधुर बैन हैं मन भाये ॥२॥

पै पीहर से अधिक प्यारे तेरे चरण मनोहर ।

पति ही पत्नी की जीवन नौका का है खेवट प्रियवर ।

हैं वही एक सहारे, तेरे मधुर बैन हैं मन भाये ॥३॥

मात पिता और भामिनि भाई जितने जग के नाते ।

अपने अपने पुण्य कर्मों का योग सभी है पाते ।

हैं सब ही न्यारे न्यारे, तेरे मधुर बैन हैं मन भाये ॥४॥

पुरुषोत्तम ! इक पत्नी ही पति भाग्य से आनंद पावे ।

प्राणनाथ पद बोहिथ ही से जगत जलधि तर जावे ।

वेद वाणी यूं उचारे, तेरे मधुर बैन हैं मन भाये ॥५॥

अभीष्ट दानी मेरे स्वामी तुम हो करुणा सागर ।

बन का सौभाग्य मैं पाया तव कृपा सो नागर ।

सब दिवस मंगलाचारे, तेरे मधुर बैन हैं मन भाये ॥६॥

ऐसे ही सहसों वर्षों तक स्वामी पति भक्ति उर धारुं ।

सत्य श्रद्धा और दीन चित होइ दुख सुख में नहि हारुं ।

करुं सेवा सतिकारे, तेरे मधुर बैन हैं मन भाये ॥७॥

अनन्य भाव से युक्त सदा हो निर्भय चित अनुरागी ।

अपने प्राणनाथ रघुवर के रहूं चरण संग लागी ।

करुं वारण सुख सारे, तेरे मधुर बैन हैं मन भाये ॥८॥

प्रभु बोले मेरी प्राण जीवनी दीन वचन क्यों कहती ।

रवि से प्रभा चान्दिनी शशि से त्यों तुम संग नित रहती ।

साक्षी कोकिल हमारे, तेरे मधुर बैन हैं मन भाये ॥९॥

(20)

प्रीतम को अनुकूल देखि हुई प्रमुदित जनक कुमारी ।

पिय मुख चन्द्र निहारी, प्रमुदित जनक कुमारी ॥

हंसि हंसि के श्रीराम को आनंद दीया ।

जग वन्दन उर चंदन पिय प्रसन्न कीया ।

अजर अमर प्रिया चन्द्र बदन लखि भयु सुखारी ॥१॥

तब गद् गद् हो आशीष कोकिला बोली ।

चिर जीवों सियराम की जोड़ी अमोली ।

रवि शीश अग्नि वरुण और सुरपति रक्षा करहैं तुम्हारी ॥२॥

रमा रमा पति विष्णु करहैं कल्याणा ।

कवि कुलपति ने किया मधुर गुण गाना ।

पृथ्वी और गगन के सुर मुनि जै जै वचन उचारी ॥३॥

रूप ओ गुण की शोभा परस्पर होती ।

पै प्रीति से ही जगती प्रीति की ज्योती ।

इससे परस्पर प्रीति युगल की दिन दिन वर्धनकारी ॥४॥

प्रेमी प्रिया से कोई न बात दुराता ।

सरल हृदय से अपनी बातें बताता ।

फिर मैथिलि राघव प्रीति अलौकिक तीन लोक ते न्यारी ॥५॥

परम उदार रामजू का मन नित प्रिया में रहता ।

अपना उर अर्पित कर कोटि कोटि सुख लहता ।

सती शिरोमणि श्रीजू का भी प्रेम है अखण्ड अपारी ॥६॥

देव कन्या ज्यों दिव्य स्वभावा शील भरी सीया ।

सती साध्वी सरल हृदया कीरति कमनीया ।

प्राणवल्लभ की प्राण वल्लभा कोटि प्राण से प्यारी ॥७॥

श्रीवैदेही को नित प्राणें से प्यारे श्रीरघुनाथा ।

दोऊ दोउन के लिए रहत मन हाथा ।

सिय उर को पिय, पिय उर को सिय सब विधि जाननहारी ॥८॥

परम सुन्दरी सीया संग रघुवीरा ।

परम आनन्दित शोभा सम्पन्न प्रेम गम्भीरा ।

ज्यों कमला सो कमलेश्वर त्यों सिय रघुवर धनुधारी ॥९॥

नूतन नेह युगल का वेद भी गावे ।

शेष सहस मुख गावत पार न पावे ।

कोटि तीर्थ सम पावन कीरति गरीबि श्रीखण्डि उचारी ॥१०॥

(21)

आज देखी यमुना तट पै विहरती सरकार है ।

प्यारे दशरथ लाड़ले प्यारी जनक कुमारि है ।

पूर्ण शशि की चांदिनी चारों तरफ खिल रही ।

मानो दम्पति दरस से उपजा हर्ष अपार है ॥१॥

गलिबहियां दे के युगलवर मधुर मधुर बतरावते ।

शांति ध्वनि इस यामिनी में कैसी बोलन बहार है ॥२॥

पूछा प्रीतम प्यारी ! किस बन गई क्या क्या लखा ।

तब हर्ष सों स्वामिनी ने कही कथा विस्तार है ॥३॥

ये जो दूरि से दिख रही मेघ सम वृक्षावली ।

उसके बीचि विशाल आश्रम देख अति सुखसार है ॥४॥

समीप में सरिता थी बहती वैद्यूर से फले कमल ।

चक्रवाक ओ जल कुक्कटों की होती मधुर गुं जार है ॥५॥

हंस सारस सारिका शुक कोकिला भी खेलती थीं ।

सुन्दर सरोवर पुष्प वाटिका मानो विश्व श्रृंगार है ॥६॥

देखी पर्ण कुटी वहां इक, जामें तपस्वनी राजती ।

सप्तसतियों से घिरी मानो तपस्या की भण्डार है ॥७॥

सातवें दिन करती भोजन सदा वलकल धारणी ।

जांके तप से सुर असुर झांके न द्वार है ॥८॥

वहां अस्फुट मधुर स्वर में संगीत ध्वनि मैंने सुनी ।

दिव्य सौरभ छ रही है और आभूषण झंकार है ॥९॥

मैंने जा तपस्विनी से पूछा किस ऋषि का आश्रम है यही ।

बैन सुनि उन सात सतियों ने किया अतिथि सत्कार है ॥१०॥

बोलीं कि सतियुग में हुए सुर गुर सुवन कुशध्वज ऋषि ।

अमित प्रभा, उसने किया इहां वेद उचार है ॥११॥

कन्या रूप से परा शक्ति को प्राप्त करन अभिलाष सों ।

देवी वसुन्धरा पास उनके बैठी वर्ष हजार है ॥१२॥

तब दिव्य गोलाकर मणि से इक बालिका प्रगट भई ।

श्रीवेदवती नाम की भई नभ में जै जैकार है ॥१३॥

जब वह कन्या नील वसना विहरती इस अजिर में ।

मानों कोई दिव्य देवी रूप की आगार है ॥१४॥

मंगलमयी शशि के समाना सर्वांग उज्ज्वल रूपवान ।

हंसि हंसि खेलत गोद जननी शोभा निधि सुकुमारि है ॥१५॥

चन्दन वृक्षों से घिरी वहां बावली रमणीक थी ।

मधुपों के संगीत संयुक्ति इन्दीवर कलहार है ॥१६॥

कहीं केकी नृत्य करते कहीं कूदते उन्मत हिरण ।

कुहू कुहू कोकिल की प्यारी वरषे रस की धार है ॥१७॥

उससे थोड़ी दूर पर बहु स्वर्ण कर वेदी बनीं ।

तिन पै तपस्वनी विराजत लताएं छत्राकार है ॥१८॥

अपने अवध के राज्य से भी वह विपिन प्यारा लगा ।

अपूर्व आनन्द का तहां एक रस अधिकार है ॥१९॥

प्यारे कौशल राज्य भरता मेरी इच्छा है यही ।

कोटि कल्प लो आप संग भाता ये विपिन विहार है ॥२०॥

वहां से आयी यमुनि तट पर देव अंगना जहं गा रही ।

मैंने तंह निग्रोध वट पै देखा चमत्कार है ॥२१॥

वट के कोमल पत्र पर बाल मुकुन्द थे राजते ।
निज पदांगुली मुख में डालें हंसता बारम्बार है ॥२२॥
नव किशोर उस बाल की हंस अस्तुति गा रहे ।
ज्यों गरीबि श्रीखण्डि गावत तेरा चरित उदार है ॥२३॥

(22)

नमो नमो श्री बाल मुकुन्द प्राण प्यारा ।
जय नव किशोर चित के चोर विश्व सहारा ॥
सुन्दर नीलम तमाल से अति कान्ति मनोहर ।
विशाल भाल लोकपाल रूप उज्यारा ॥१॥
मुख चन्द्र में लता समान अंगुली दिये हैं ।
मराल मण्डली से घिरे बालहिं जुहारा ॥२॥
अभेव हो अजेय हो अमित लोक हो ।
निष्काम सकल कामदा जय रूप तुम्हारा ॥३॥
स्वयं अव्यक्त के तुम कारा विधाता ।
सब उर निवास सब से दूर जीय जियारा ॥४॥
निष्काम तपस्या वान तुझे प्राप्त कर सके ।
बिन दुख के हो दयाल निराकार साकारा ॥५॥

अजरा पुराण पुरुष तुम्हें सन्तों ने कहा ।
अजन्मा हो भक्त के वशि जन्म है धारा ॥६॥
तेरे यथार्थ रूप को कोई न जान पाता ।
कोई चेष्टा नहीं है तुम्हें पै शत्रू संहारा ॥७॥
सोते हुए भी जागते तुम प्रणत पाल हो ।
केवल स्मरण से ही दुखी जीव उबारा ॥८॥
अज्ञान विपिन दहन कृशान हो प्रभू ।
सन्त कमल कानन हेतु हो तुम कश्यप कुमारा ॥९॥
भव भंजन र जन सन्तनि मदकाम के गंजन ।
संशय सर्प गिरसन को उरगारि उदारा ॥१०॥
गुण आगर हो नव नागर हो हो भव सागर के सेतू ।
ज्ञान गिरा गोतीत हो भ जन महि भारा ॥११॥
हो सर्व सर्वगति उरालय विश्व के भरता ।
पावन सुजस तेरा वेद पुराण पुकारा ॥१२॥
जै अविनाशी सब घट वासी परमानन्द रूपा ।
भव वारिध कुम्भन केशव सिंग सेवक आधार ॥१३॥

इस रीति हंसो ने करी कीरति मुकुन्द की ।

उस अजन्मा अनीह प्रभु आनन्द कंद की ॥

वह सब ही स्मरण है मुझे श्रीजनकनन्दनी ने कहा ।

पिता जनक के प्रसाद से सुनी बात का स्मरण रहा ॥

अब आपके श्रीमुख का दर्शन कर रही इन नयन से ।

यह कितना मेरा सौभाग्य है भई धन्य हूं उर चैन से ॥

आपके श्रीचरण का करके चिन्तन निज हीय में ।

बोलती हूं मधुर बानी अति प्रसन्न हो जीय में ॥

चत्रुमुख के शिष्य आश्रम की है महिमा अति बड़ी ।

आपकी कृपा से प्राप्त हुई यह शुभ घड़ी ॥

मिलन आनंद से भरा देखे ये मेरा निकुंज है ।

अमृत रश्मियों से चमकता सकल सुख का पु ज है ॥

सुनि प्रिया के बैन मीठे श्रीरघुनाथ जी प्रसन्न भये ।

मधुर भाषिणि मैथिली के प्रीति रस में पग गये ॥

लखि युगल आनन्द में कोकिला गावन लगी ।

पिया प्रीतम प्रेम की है ज्योति जिसके जिय जगी ॥

बड़भागी श्रीराम जैसा त्रिभुवन में नहीं ।

जै जै श्रीरघुवीर की है सब के मुख माहीं ॥

जिस दिन से स्वामिनी ने वरमाला गले में डाली ।

बढ़ी सहस्र गुनी शोभा हुई कांति निराली ।

और कीरति जग छाई ॥१॥

उमा नाथ ओ रमा नाथ समता में नहीं आवें ।

सियाराम सनेह महिमा शेष सहस मुखनि गावें ।

परिपूरण रस अवगाही ॥२॥

कुमारपन से दोऊ भये दुख ओ सुख के साथी ।

जंह तंह परस्पर रक्षक दोऊ बाल संघाती ।

दोऊ दोउनि पै बलि जाहीं ॥३॥

दोऊ दोउन उर मन्दिर करते हैं विश्रामा ।

सत्य प्रेम दोऊ दोऊ हैं पूर्ण कामा ।

दोऊ ऋणियां दुहं पाहीं ॥४॥

हैं नेह निपुण दोऊ दोऊ रस के सागर ।

दोऊ वीर धर्मधीर तीनों लोक उजागर ।

दिये रहते गल बाहीं ॥५॥

बिन पलकनि निरखें दोऊ रहें तोऊ नयन प्यासे ।

दोऊ दोउनि वसन भूषण दोऊ दोउनियम भासे ।

दोऊ दोउनि सुख चाहीं ॥६॥

गरीबि श्रीखण्डि युगल की ये गाथा सुन्दर गाई ।

सौभाग्य से सियाराम की किंकरी पद पाई ।

नेह सरिता में नहाई ॥७॥

(25)

श्रीसिया प्यारी तुम हो जीवन मेरी बसी रोम रोम छबि तेरी ॥

सुधा मधुर ये तेरी बाणी मेरे मन प्राणों को भाणी ।

प्यूष वर्षा होती है काननि बोलत प्रेम पहेली ॥९॥

चन्दन रस सम स्पर्श तेरा जीवन धन्य हुआ है मेरा ।

अंग अंग माधुरी मन माहीं अनूपम ज्योति बगेरी ॥१०॥

सत्य कहत हूं कुसुम कोमिला तुम मेरी हो शक्ति उज्जवला ।

इक क्षण भी तेरे अदर्शन से होती है पीड़ घनेरी ॥११॥

तुम हो सतीगुर धरानन्दनी स्वनाम धन्या जगत वन्दिनी ।

साम यजुर ऋगवेद की कन्या वेदवती सुर टेरी ॥१२॥

तुम वही वाणी रूप रसाला स्वयं प्रगट भई नैन विशाला ।

प्रेम मूर्ती सुरगुर नातिनि रही राम उर घेरी ॥५॥

कमल नयन तेरे मधुरे बैना प्रेम रसाइणि मम उर चैना ।

कुम्हलासे मेरे जीअ कुसुम को प्रफुल्लित करे हर बेरी ॥६॥

विवाह समय से लेकर प्यारी घर में वन में भुजा हमारी ।

तेरे सिवा और किसी का तकिया नाहिं बनेरी ॥७॥

मात पिता और प्रिय परिवारा अवध राज सुख छोड़ि अपारा ।

तुम्हरे साथ कालागुर नीचे पल्लव सेज बसेरी ॥८॥

प्रिया प्रेम के पात्र रघुवर सजल जलध सम गात मनोहर ।

सत्पुरुषों के आनंद दाता गरीबि श्रीखण्डि पद चेरी ॥९॥

(26)

मतवाले मोर बोलें जै जनक दुलारी ।

ऋषि मुनि गणों ने मानों है आशीष उचारी ॥

रसाल कुंज यमुना तीर बहती जहां सुख समीर ।

कोकिल का मधुर गान ये रस मोद से भरा तुम्हें होवे सुखकारी ॥१॥

ये द्रुमलता मंगलमयी फूल मणियों से खिल रही ।

देती आशीष बार बार शिवप्रिया समान हो सदा रघुनाथ की प्यारी ॥२॥

तेरे ही सुख ओ हर्ष लिए विधि ने ये निर्माण किये ।

कालंदी कूल मंगल मूल सौंदर्य राशि सुखदवास प्रभा अपारी ॥३॥

वृक्षों की यह सुन्दर पंगति हवन धुएं से भयी है रंगति ।

लता के पल्लव नाच रहे इन्हें देखि प्राण प्रिया करो वंदन जुहारी ॥४॥

हंसनि समान मधुर गती, देखि लाजे कोट रती ।

अंग कांति हेमवरण, कानों को प्रिय मधुर स्वर, है वीणा झंकारी ॥५॥

तुम्हीं प्रिया हो धरणि इन्दु, लाजते है गगन चन्दु ।

वह विरहिनि दुख दाई है तुम सुधा धाम प्राण औषधि जीय जियारी

॥६॥

तेरे नयनों से लाज मान मृग किये बन पयान ।

जल में कमल ये जा छिपे लखि सौरभ सिन्धु तव वदन की कांति

उज्यारी ॥७॥

प्रेम मुग्ध प्राण जीवनि, सरल प्राण जनक सुवनि ।

शुभ मधुर गुणों की आगरि, संतों के दरसफल ज्यों तेरा मिलण

मंगलकारी ॥८॥

कोकिला गरीबि श्रीखण्डि गावत तेरा जस अखण्ड ।

तेरे नाम राशि में मगन जाती है रैन दिवस तेरे चरणों पै वारी ॥९॥

प्रीतम के भुजबली पै श्रीप्रिया को नींद आ गई ।
पै नींद से भी निजनाथ के प्रीतिरस के वसि भई ॥
अपने वक्ष स्थल पै प्यारी कर कमलों को रखि लिया ।
कहीं प्यारे निकल न जाएं हृदय द्वार को बंदि किया ॥
मुकिलित कमल सम नैन प्रिया श्रीरामजी देखन लगे ।
अतृप्ति नैनों से विलोकत प्राण मुख सौरभ पगे ॥
मन ही मन कहते हो विधिना तेरा कठिन विधान है ।
मधुरता ओ विधुरता का हर जगह पै मिलान है ॥
श्रीमैथिलि चंद्र का मुख कमल में नित निहारत ही रहूं ।
कुल इष्ट श्रीरंगनाथ की आशीष ये नितु नितु चहूं ॥
तेरे हृदय चन्द्र राका रजिनि जीवनि संगिनी श्रीजानकी ।
मेरे नयन सन्मुख नित रहे पोषिका मम प्राण की ॥
प्रिया दर्शन सुख में प्रभु को वह रजनी मनरंजित भई ।
पै पश्चिम दिशा को पलक में निशिनाथ की सवारी गई ॥
रसाल पै श्रीखण्डि कोकिल बोली कि अब प्रभात है ।
जागो युगलवर प्राण जीवन जय हो कहि विगसात है ॥

स्वामिनि चरणनि वार वार वन्दन हमार ये ही है जीवन मेरा ।

श्रीमिथिलेश कुमारि सती सरदार, ये ही है जीवन मेरा ॥

जिनके रूप सुधा को पीकर अमर भये श्रीराम ।

जिनके मधुर नाम को रटि रटि पाया है रस विश्राम ।

जस गावत है त्रिपुरारि हो बलहार ये ही है जीवन मेरा ॥१॥

चरण कमल की कोमल अंगुली सेव्य औ शरण हमारी ।

पावन प्रेम सौभाग्य की भाअनि श्रीनिमिवंश उज्यारी ।

नितु चरण कमल उर धारि करुं दुलार ये ही है जीवन मेरा ॥२॥

गुलफों तक जाकी लम्बी बैनी, नील अलियों की पंकति ।

धनुष समान सलोनी सुन्दर, भू विलास की रंगति ।

हरि गुर है रखिवार साहिबि हमारि ये ही है जीवन मेरा ॥३॥

विशाल भाल पै सिन्दुर बिन्दु का तिलक श्रृंगार किया है ।

ज्ञान प्रेम सम करणफूल दोऊ काननि पहनि लिया है ।

श्रीसाकेत की सरकार अति सुकुमारि ये ही है जीवन मेरा ॥४॥

आदि सत्य औ मध्य सत्य है सत्य सत्य हे स्वामिनि ।

सत्यवृत और श्रीसत्य पदकमल सत्य पिय भामिनि ।

नित्यु सत्य है राम उदार प्राण आधार ये ही है जीवन मेरा ॥५॥

परम सत्य श्री पार्थिवि चंद्र की शरणि शरणि नितु गाऊं ।

सत्य आत्मका श्रीस्वामिनि का नित नित मंगल मनाऊं ।

जै जै श्रीजनक दुलारि सब सुख सारि ये ही है जीवन मेरा ॥६॥

सूरज उदय हो गया स्वामिनि अब निद्रा को त्यागो ।

कोकिल तेरी बोल रही है, जीजी जानकी जागों ।

लहो नित नित प्रेम प्यार हर्ष अपार ये ही है जीवन मेरा ॥७॥

(29)

कोकिल की किलकार सुहावनि सुनि सुनि स्वामिनि जागी ।

प्रेम मुदित हो प्रीतम से कुछु बतरावन लागी ॥

आज सिया रघुनंदन प्यारे त्रण शैय्या पर शयन किया ।

यद्यपि योग जुगल के नहीं पै इन ने कब ध्यान दिया ॥

वे तो परस्पर मधुर प्रेम के झूले में है झूल रहे ।

रूप सुधा को पी पी करके आनन्द रस में फूल रहे ॥

श्रेष्ठ पुष्पों के भार से सुन्दर डाली पृथ्वी चूम रही ।

उनकी गंधि पै भंवरो की पंगति मद मत होकर झूम रही ॥

मौल सिरी और पारजात के फूल समीर ले जाती है ।

प्रेम पाहुने युगल चन्द्र के चरणों मांहि चढ़ाती है ॥

नैहर सम निमि नन्दनि जूं को सचुमुच बन है प्यारा ।
फिर यमुना का पुलनि मनोहर साथ में प्राण आधारा ॥
कुश पाने के लिए कुरंग मिलि कूद कूद सुख देते हैं ।
मोर मोरनी मधुर नृत्य से दर्शक दुख हर लेते हैं ॥
मधु पान की आशा से भंवरे दौड़ दौड़ रस पीते हैं ।
एक दूसरे पर गिर गिर के मानों कुश्ती जीते हैं ॥
सुधा सरस फल खाय विहंगवर जै जै जानकी बोलत है ।
इस डाली से उस डाली पर चहक चहक कर डोलत है ॥
श्री किशोरी निजकर कमलनि शुक सारीको बिठाय लिया ।
जै रघुनंदन बोलो बेटा ये ई मन्त्र सिखाय दिया ॥
फिर मधुर गती से पद विन्यास कर स्वामिनि विहरण लागी ।
रत्न जटित कटि किंकणी सुन्दर मधुर झंकार में पागी ॥
पद पल्लव के मु ज म जीर से ऐसी धुनि है आती ।
मानो प्रेम पिंजर में बैठी पिक पंचम स्वर में गाती ॥
खनन खनन झन झनन कह नूपुर ध्वनि है बोल रही ।
द्रगट द्रुम द्रुम नृत्य करि बन देवियां हैं डोल रहीं ॥
पुष्प चयन करि करि स्वामिनि को दूर विपिन में जात लखी ।
वात्सल्य प्रेम विवश हो हित सों बोली कोकिल रूप सखी ॥

सुनि अे स्वामिनि मत गज गामिनि दूर विपिन में न जाओ,

हो अब दूर विपिन में न जाओ ।

बहुत पुष्प यहां फूल रहे हैं चुनि चुनि हार बनाओ,

हो अब दूर विपिन में न जाओ

स्वामिनि बोली कोकिल सहेली सुनु मेरी प्यारी बात रसीली ।

पुष्प मनोहर खूब खिले वहां क्यों तुम रोक लगाओ ॥१॥

कोकिल बोली स्वामिनि प्यारी परिचित दोऊ न यह सुकुमारी ।

शाप अनुग्रह समर्थ ऋषि मुनि आगे न चरण बढ़ाओ ॥२॥

पुष्प चयन कर जो लखि पावे रोष में कोई मुनि भरि जावे ।

श्रीरघुनाथ भी दूर रहेंगे पुष्प यहां पै ही पाओ ॥३॥

श्रीजू कहा फल पुष्प मूल जल सर्वसाधारण हित है जल थल ।

क्यों कोई कोप करेगा कोकिल व्यर्थ न मोहि डर पाओ ॥४॥

मेरे नाथ है कौशल्या नन्दन समर्थ स्वामी सब जग वन्दन ।

देव पूजन हित पुष्प मैं लाऊं तुम मत जीअ सकुचाओ ॥५॥

दूसरी ओर देखकर स्वामिनि मधुर वचन बोली वर भामिनि ।

क्यों यह भंवरे लताओं में भटके, सखि इसका भाव बताओ ॥६॥

कोकिल बोली अम्बा श्रीजानकी इनकी भंवरी है प्यारी प्राण की ।

मधु पान मत्त हो पल्लव लुकानी ये वृह व्यथा भरमायो ॥७॥

सत्य कहा मेरी बालि सयानी तुमने ये बात है ठीक पहचानी ।

पै यह अचरज पास छिपी हुई भंवरी न देखन पायो ॥८॥

प्रिय हित व्याकुल हो प्रेमी साचा सब गुण भूषण प्रेम रस राचा ।

प्रेम लक्ष्मी उसको हो प्राप्त जेहि निज भानु भुलायो ॥९॥

ज्ञानवंत जीजी बलि बलि जाऊं वेद वत्यल गुर तव गुण गाऊं ।

नित पति साथ सुनो इस सारकनि कैसो मधुर सुर गाया ॥१०॥

श्रीजू कहा देखो कोकिल बाले पूंगी नारियल की हिलती है डालें ।

श्रीरघुनाथ के स्वागत माहीं कितनो है चाव बढ़ायो ॥११॥

योवन मत्त ये श्वेत कमल हैं चंवर समान ही परम मंगल है ।

त्रिविध समीर झकोरों से हिल हिल उर आनंद उपजायो ॥१२॥

यह स्वामिनि कोकिल सम्बादा रसिक जननि उर है अहिलादा ।

सिय रघुवर पद पद्म मनोहर गरीबि श्रीखण्डि नित ध्यायो ॥१३॥

(31)

प्रसन्न वदन लखि स्वामिनि को बोली कोकिल मधुर बानी ।

चिरु जीवो मेरी शोभा सागरि स्वामिनि मैथिलि राणी ॥

नैन पद्म मृणाल भुजाएं लावण्य लीला जल है ।

पिक शुक मीन कपोत दा दर्पण मुख शोभा शरद कमल है ॥

चक्रवाक और अहिकुल सुन्दर मधुप निकर और कुंद कली ।

अंग अंग कांति मनोहर शशि सम चमक रही है भांति भली ॥

कैसरि युत है अमृत बांवली गंग तरंग मनोहर है ।

तव श्रीविग्रह रामचन्द्र का मानो सुन्दर सरोवर है ॥

जै हो जै हो सीय स्वामिनि श्रीमैथिलि राज दुलारी जू ।

श्रीरामचन्द्र उर विमल चन्द्रका पार्थिवि प्राण प्यारी जू ॥

यह सुन बनपीहरी विदेहजा मधुर मधुर मुस्काती ।

समीप कुंज में लाड़ लड़ैती छिपी जाय सकुचाती ॥

पार्थिवि प्राणा कोकिल सहचरि स्वामिनि को नहि देखा ।

विरह व्यथा से व्याकुल होकर व्यर्थ जीवन लेखा ॥

दुख और आश्चर्य में हो मग्ना बन प्रदेशे दूँढन लागी ।

सकल शक्ति को कंठ में लाकर कुररी ज्यूं रोवन लागी ॥

(32)

प्राणों में होती है पीड़ मेरी स्वामिनि प्यारी आज्ञा ।

जीयड़ा होत अधीर मेरी राजदुलारी आ जा ॥

कहां गई है मैथिलि मैया जीवन संगिनि श्रीरघुरैया ।

ललित लड़ैती प्रियलि देवी मोंहि अपना पता बताजा ॥१॥

मेरा जीवन प्राण तू ही है सर्वस्व ठाकुर भगवान् तू ही है ।

तुझ पै वारों विश्व किरोड़ी मोंहि आकर धीर बंधाजा ॥२॥

हाय कहीं भी दरस न पाती बांवरी हो कर हूं बिललाती ।

महिषी सभागी शीलमणि राणी मेरा जीवन सफल बनाजा ॥३॥

वायस भैया सत्य बताओ कहां है स्वामिनि मोंहि सुनाओ ।

मृग नैनी प्राण आत्मा मेरी अम्बा वेगि दिखाजा ॥४॥

रो रो नयननि नीर बहाऊं काह करूं मैं अब कित जाऊं ।

सकल दिशा मोंहि लागे अंधेरी मोरे मन की मांद मिटाजा ॥५॥

मम हियं में विश्वास अचल है स्वामिनि करुणानिधि कोमल है ।

चरणनि चेरी क्यों है छोड़ी अपना अब बिरदु बढ़ाजा ॥६॥

मुख मकरंद के पीने वाले दरस सुधा से जीने वाले ।

मिल गए क्या अब प्राण जीवन धन या रूठी हो समुझा जा ॥७॥

सुनि कोकिल की प्रणय बानी हंसि पड़ी कुंज में श्रीमैथिलि राणी ।

चरणों में पहुंच कोकिल बोली, चिर जीओ सती सिरताजा ॥८॥

देखि के मुखिड़ा दुखिड़ा भूली प्रेम हिंडोले कोकिल झूली ।

पद पराग को चूमन लागी सब पूरण भए मन काजा ॥९॥

श्रीजू कहा क्यों चरणनि चूमो लाज छोड़ि करि उन्मति झूमो ।
बड़ी बड़ी बातें डीठ हो बोलीं मेरे पल्लव छोड़ दे जा जा ॥१०॥
अई मुख पर क्यों भरा पसीना आंसुनि से क्यों अंचल भीना ।
चाटु वाक्य तेरे छिपि सुनती थी अब अपना हाल सुनाजा ॥११॥
कोकिल बोली दोऊ कर जोड़े आंसू बहाकर विनय निहोरे ।
डीठिता मेरी क्षमा कीजो गरीबि श्रीखण्डि के हिय राजा ॥१२॥

(33)

सुनो मैया विनय मेरी सुनो मैया विनय मेरी ।
बिना दर्शन के तुम्हारे भए युग पलक हमारे ।
रवि ज्यों था शशी तपाता विरह व्यथा ने घेरी ॥१॥
कुलिश ज्यों लगती समीर कंटक सम चुभते थे चीर ।
अंगारा ज्यों पुष्प जलाते बीथियां बन की हेरी ॥२॥
कहता कोई मीठी जो बातें होती मानो वज्र की घातें ।
भार भया जीवन मोकूं कुररी ज्यों नाम टेरी ॥३॥
क्षमा करो दोष मेरा लिया मैं आश्रय तेरा ।
करुणा की मूरति स्वामिनि बालिका हूं मैं तेरी ॥४॥

तजो अब रोष को मैया प्रसन्न हो कीजिए दैया ।

निर्मल बना के मुझे करो निज चरण चेरी ॥५॥

लखि मुख चन्द्र किशोरी भई त्रिलोकी चकोरी ।

अशोक हो आनन्द की निधि बजी जै धुनि की भेरी ॥६॥

कुवलय दल श्याम लघन लखि निज नाथ वदन ।

दिनों दिन सौभाग्य बढ़े सुख सम्पति की ढेरी ॥७॥

हंसी बन देवी नारी पुष्प वर्षा करे प्यारी ।

संगीत सूं गंधर्वियां सबे गावै कीरति घेनरी ॥८॥

सियाराम का मंगल गाऊं चरणों पै बलि बलि जाऊं ।

तजिना न कुटिला कोकिल राखो पद कंज नेरी ॥९॥

कोकिल के सुनि बैना प्रसन्न भई पद्म नैना ।

आनंद की किरणें छिट्कीं खिली मुख चन्द्र उजेरी ॥१०॥

(34)

मिथिलेश लली अति प्रसन्न हो प्यारी कोकिल शीश कमलकर धारियो

धन्य बची तेरी प्रीति सच्ची है हर्ष दियो उर रोष निवारियो ।

प्रिय बैन सुने उर चैन भयो सुख कान औ नैन न जात संभारियो ।

अंग अंग तेरे पुलकावलि है पद कमलनि पावन प्रेम ते पारियो ॥११॥

मम नैननि की तुम कौमुदी हो मम दूसर हृदय हो सुकुमारी ।

पन्द्रह कल्प ते अरिण्य वास की, कोकिल बेटी हो सहचरी ।

मेरे लिए तव हीय सरोवर प्रीति पुनीति फूली फुलवारी ।

रैन दिना नित झूलत हूं मैं तेरे मधु बैन के झूले मंझारी ॥२॥

मन मोद प्रमोद लहा अति ही, सहजे सुख सागर हींअ लहरायो ।

नितु संगि मिली रस रंग रली, तऊं सेवक सेव्य पन दृढ़ायो ।

तुव भविष्य के कोटिनि जन्मों में कोकिल रहे सुख शांति औ हर्ष

समायो ।

अब मेरी बालकि कोकिल प्यारी मांग लेवो वर जो मन भायो ॥३॥

आनंद औ अहिलाद भरी पिक, स्वामिनि की सुनि कोमल बानी ।

मणिमय मंगल दीप जगाइ, उतारत आरती कोकिल राणी ।

जनक नरेन्द्र जणी जय हो जय हो सिय अम्ब ओ अम्ब निमानी ।

मैथिलि चंद्र मणी पिक आपनी कीन्ह प्रिया मन मंगल मानी ॥४॥

(35)

मेरी अम्बा जनक नन्दनी जय जय हो तुम्हारी ।

जय जय हो तुम्हारी मिथिलेश दुलारी ॥

मै तो हूं जन्म जन्म में तेरे चरणों की चेरी ।

सची श्रद्धा औ अनुराग से करुं सेवा घनेरी ।

निशि दिन सनेह मगनु हो रहूं नाम प्यारी ॥१॥

मुझ दीन पै प्रहर को भली चरण बढ़ाएं ।

पै पद पद्म पड़ी रहूं ऐसी कृपा मनाएं ।

कोटि कल्प रहूं किंकरी अभिलाष हमारी ॥२॥

उबटन स्नान भोजन बैठन उठन में ।

और मन विनोद देव अर्चन गेह बन में ।

पद ललितों में लुठती रहूं यह धारणा धारी ॥३॥

नरक स्वर्ग में रहूं या भूतल ओ थल में ।

फूलहार या तीखी धार का कुठार हो गल में ।

पै सतिगुर प्रसाद से रहूं प्रेम मतवारी ॥४॥

सरयू तीर हरे वृक्षों की बसूं छां सघन में ।

दिन रात मधुर भाव से धरुं ध्यान ये मन में ।

प्रिया पद मंजीर पिंजर की हूं कोकिल कुमारी ॥५॥

सदा प्रसन्न वदन स्वामिनी का देखती रहूं ।

गुर ईश्वर की आशीष से वरदान ये लहूं ।

नख चन्द्र की हो चांदनी मन मन्दिर मंझारी ॥६॥

नम्र प्राण कोकिला की ये सुनि विनय माधुरी ।

करुणा निधान स्वामिनी तब बैन ये उचरी ।

ऐसा ही हो ऐसा ही हो मेरी कोकिला बारी ॥७॥

(36)

जै जै जनक नन्दनी स्वामिनि मम आराध्या अम्बा प्यारी ।

अति अहिलादिनि आज भई तव कोमल बैननि पै बलहारी ।

देखिये मातु ये आवत हैं करके मृगया प्रभु अवध बिहारी ।

कंद मूल फल लिये कर कमलनि सिंह की चालि पिया धनु धारी ॥९॥

मीठे मीठे फल हाथ लिए और पीछे से आवत लक्ष्मण प्यारे ।

प्रभु सेवा के हेतु संजोवती हूं दिव्य मंगल अर्घ्य ओ फूलन हारे ।

चिरु जीवे सदा प्यारो कौशल नन्दन संतनि चन्दन साथ तुम्हारे ।

पद्म कल्प तक राज करो मिलि प्यारे युगलवर अवध मंझारे ॥१॥

दोहा : इधर कोकिला श्रीस्वामिनि की कर रही अस्तुति गान ।

उधर लक्ष्मण से करत प्रभू मधुर मधुर बतरान ॥

(37)

हो देखो लक्ष्मण यमुना तीर ।

कैसी ये बसंत बहार पाई बहती त्रिविधि समीर ॥

सिंधु सरस्वती और कावेरी नर्मदा तापी सुरसरि हेरी ।

नंहि भानु सुता सम सीर ॥१॥

सिंह पीठ को मृग खुजलाते नकुल स्वास पी सर्प हर्षाते

हो निर्भय विहरत धीर ॥२॥

कल कल नाद बहे यमुना धारा, टूक टूक हो बहे शाखा अपारा

बोलते कोकिल कीर ॥३॥

रविजा पुलनि सम सिक तल है हरी हरी घासों से भूमि कोमल है

लहरें है गहर गम्भीर ॥४॥

शिंघिनि दूध पान करत है रैन दिना हरि ध्यान धरत है

तपसी परण कुटीर ॥५॥

धरा नन्दिन की प्रसन्नता हित मानो अयोध्या ले सब सम्पति ।

आई है सुन्दर समीर ॥६॥

बसंत सरसी में कुमदिनी खिली है सौरभ आमोदित विपिनगली है ।

मेढत पथिकनि पीर ॥७॥

कालिन्दी तट परम सुहावन जंगम गती आए अलका स्वर्ग बन

गुंजत मधुपिन भीर ॥८॥

तरु मोल चुम्बन चकवी है करती लोल लोल नैनों से निगाहें भरती

छिन छिन होत अधीर ॥९॥

अवश्य लखी इन जनक दुलारी इससे भयो है उर आनन्द भारी

भूली हैं भान शरीर ॥१०॥

इतने में आई कोकिल खंडिड़ी श्रीरामचन्द्र के चरण कमल पड़ी

बोली जय रघुवीर ॥११॥

(38)

गद् गद् गिरा सों बोली कोकिल जय जय कौशल्या लाल प्यार ।

जय जय अघ खंडन श्रीलक्ष्मण श्रीसुमित्रा मातु दुलारे ॥

आनन्द कंद दयाल दूलह योगीन्द्र चन्द्र राम जू ।

तेरे चरणों की शरण हूं संतनि के सुख धाम जू ॥

दशमुख दलन संत रक्षा सों तेरी कीरति उत्पन्न भई ।

भू मण्डल में विस्तरित हो ब्रह्मलोक में उड़कर गई ॥

वहां बृझ वाहन हंस से मिलिके जो गर्भिणि हुई ।

नभ गंगा तट प्रसव किया तासों चन्द्र की उत्पति भई ॥

पतिव्रता शिरोमणि कीरति और चन्द्र चूड़ामणि बने ।

ऋषि मुनियों और देवताओं ने किये आदर घने ॥

सुमेर का ऊखल बनाकर नभ गंगा को मूसल किया ।

तेरी कीरति चावलों को सुर बंधुओं ने कूट लिया ॥

हिमाचल उन चावलों का ढेर है रघुनाथ जू ।
तारागण कण चावलों का निकला है उन साथ जू ॥
पूर्ण चन्द्र की चांदनी जो खिल रही चहूं और है ।
तेरी कीरति का चन्द्र मुख जो चमकता बर जोर है ॥

(39)

जय करुणा मय रघुनाथ हरी जय करुणा मय रघुनाथ हरी ॥
अदृष्ट पूरव से डरती हूं कृपा कोर आशा करती हूं ।
श्रद्धा भक्ति से चित भरती हूं चरण शरणि में आनि पड़ी ॥१॥
सजल जलद गात्र श्रीरामा सब जग को किया पूरणु कामा ।
अति बलशाली हो सुखधामा प्रणतनि विपदा दूर करी ॥२॥
चरण कमल तेरे रघुनंदन आगे पीछे हैं मम वन्दन ।
चारों ओर चरचूं मैं चन्दन नमन करूं हर बार घड़ी ॥३॥
संसार सुख से ऊबा मन मेरा ब्रह्म सुख से भी विकल घनेरा ।
परा प्रेम चाहती हूं तेरा रहूं महारस फरन फरी ॥४॥
उदार चूड़ामणी जगन्नवासी धर्म धुरीन सदां सुखरासी ।
प्रसीद प्रसीद पिता अविनाशी कर जोड़े हूं दीन खड़ी ॥५॥
सुनि कोकिल के बेन मनोहर अति प्रसन्न हो बोले रघुवर ।
सुनि मेरी वत्सी कोकिल सुन्दर शरणि पालक मेरी बान पड़ी ॥६॥

इक बार भी ऐसा पुकारे शरणि पड़ा हूं राम तुम्हारे ।

तांके मिटाऊं भवभय सारे फिर काहे तू वत्सि डरी ॥७॥

यज्ञ दान तप कर्म वेदादी ध्यान धारणा योग समाधी ।

भक्ति बिना नंहि मम अहलादी प्रेम भक्ति सब से अगरी ॥८॥

तुम मेरी अविरल भक्ति से संपन्न ताते हुआ हूँ मैं अति प्रसन्न ।

दानी शिरोमणि जानि मुझे मन मांग वही जो जीय धरी ॥९॥

अति उदार सुनि रघुवर बानी श्रीकोकिल सुख सिंधु समानी ।

परम विनीत जोड़ि दोऊ पानी बोली गरीबि श्रीखण्डि ॥१०॥

(40)

मेरे स्वामी सुखदाई दीन वत्सल रघुराई ॥

मनो विलास से अधिक हो दाता परम दयालू जन पितु माता ।

प्रणत जनों के भाग्य विधाता नितु नई दया दरसाई ॥१॥

बाल स्वभाव से मैंने प्यार तव हित असम्भव मनोरथ धारे ।

तव पद कंत है आश्रय हमारे तेरी कृपा है मन भाई ॥२॥

सब जानत हो बिनु ही बताए अविचल मन सो सफल बनाए ।

पूरण काम हूं तुम अपनाए रहूं सर्वदा लिंग लाई ॥३॥

परमहंस शिरोमणि सतिगुर मेरा, श्रीवेदवत्यल वर सबसे बड़ेरा ।

कुशल चहूं तिंह पद कंज केरा तव चरणनि सिर नाई ॥४॥

यह मेरे सुख सुक्रतों की सिधी है यह मेरी निर्मल नेह निधी है ।

परा प्रेम की यह अवधी है देखूं स्वामिनि हरषाई ॥५॥

यह वर मांग समर्थ स्वामी दीन बालिका हूं अन्तरयामी ।

शरणपाल तुम जन सुखधामी पालो सब समयनि माहीं ॥६॥

देव कन्या मिलि वीणा बजावें सतीगुर स्वामिनि मधुर जस गावें ।

कोकिल कीर मिलि यह रट लावें जय जय जनक जाई ॥७॥

मणिनि जटित पहने सुठि साड़ी प्रमोद कुंजों में स्वामिनि प्यारी ।

हंसि हंसि विहरें राज दुलारी, रहूं चरणों से लपटाई ॥८॥

सत्य पकृति है पार्थिवि स्वामिनि, जगत आधार श्रीरघुवर भामिनि ।

पिय उछंग शोभे ज्यों घन दामिनि, करुं सेवा हुलसाई ॥९॥

विधि हरि हर पद वंदित माता, प्रणय रस परिपूरण गाथा ।

संतजननि सेव्य सुखदाता, यह महिमा मुनि गाई ॥१०॥

बिनु पंख पंछी ओ भूखे ब़ारे, निज जननी की राह निहारें ।

ज्यूं वियोगनि प्रीतम को पुकारे, दिन रैना अकुलाई ॥११॥

इस रीति मैं कोकिल ब़ारी, प्रति क्षण सुमिरुं स्वामिनि प्यारी ।

प्राणनि प्राण मिथिलेश दुलारी, रहे मम सुरति समाई ॥१२॥

कोकिल बैन सुनि श्रीरघुवीरा, होय प्रसन्न कही गिरा गम्भीरा ।
ऐसा ही हो बची श्रीखण्डि सुधीरा, छोड़ो विरह विकलाई ॥१३॥
किया जो कलरव ग्यारह पहर, यमुना पुलिन की लीला मनहर ।
प्रेमानन्द मगन भए मम उर, वाणी विमला सरसाई ॥१४॥
फिर बोले प्रभू सुनो सौमित्र, कोकिल सिर पै धरो कमल कर ।
गरीबि श्रीखण्डि मेरी अति ही प्रियतर, करे सीय पद सेवकाई ॥१५॥

(41)

इस रीति यमुना पुलिन पै निवास करते करते ।
चौदह वर्ष बीते पलक ज्यों आनन्द में विहरते ॥
तब बोलि उठे रघुवीर सुनो श्रीसीया प्राण प्यारी ।
श्रीअवध को अब चलने की प्रिया कीजिये तैयारी ॥
कालिन्दी लता वितान को आज छोड़ मेरा मन ।
आनंद दाता अवध का अब करि रहा दर्शन ॥
जननी समान रघुकुल को सरयू ने पय से पाला ।
अब यदि आ रहा उनका अमल तट उज्यारा ॥
परमल पंक से उज्वल कपोल ओ चपल तरंग वाली ।
वेणी समान लटकि रही दोनों ओर वृक्षों डाली ॥

कुसुम कैंसर पर मुदित मधुप दल गुंजार है ।
ऐसी सरस सरयू तट की आती यादि बारम्बार है ॥
जब तक रवि निज रश्मि का नही जाल बिछाए ।
तब तक करेंगे यात्रा मन हर्ष बढ़ाए ॥
जब सूर्य प्रचण्ड तेज से तपन लगेंगे ।
तब गहन वृक्षों नीचे विश्राम करेंगे ॥
यात्रा के उद्योग से सुनो प्राण जीवनि प्यारी ।
दुख हर्ष दोनों होते हैं मिथिलेश दुलारी ॥
मुकलित कमलनी होने तक यात्रा है आज की ।
फिर आयेगी नभ में सवारी शीश समाज की ॥
फिर जय गणेश कह के चले तीनों पथिक प्यारे ।
राह की रस वार्ता श्री कोकिल उचारे ॥

(42)

लौटते हैं अवध को, श्रीराम लक्ष्मण सुख भरे ।
अवधि पूरी हो गई हर्ष अति मन में धरे ॥
सूर्य है तपने लगा वे पांव पियादे चल रहे ।
पै स्वामिनी को राह में संताप नाहीं लखि पड़े ॥१॥

पिक पंछियों के मधुर ख से हर्ष है उर में बड़ा ।

और कुवलय दल घन श्याम पियके मुख कमल दर्शन करे ॥२॥

चलते चलते बीहड़ बन में पहुंचे जा तीनों जने ।

रवि तेज से भूमि तप रही और मार्ग कंटकों से घिरे ॥३॥

मधुर श्रीमैथिलि मातु गोदी में अचेत सी हो रही ।

लखि करुणा कान्त और प्रणय प्रेमी राम लोचन अखरे ॥४॥

ललाट पै प्रस्वेद छाए तृषा से सूखे अधर ।

थक गई थक गई प्रभू कहि पंख पल्लव का ढरे ॥५॥

सुनि स्वामिनि के बैन मीठे, 'नैन खोलो स्वामिनी' ।

प्रिय प्रेम लखि द्रवित हृदय से आंसू आ नैननि झरे ॥६॥

धैर्य शक्ति सहज गुण हिय बढ़ी मिथिलेश जा ।

पिया पद अंकित भूमि वंदन कर अहो भाग्य बार बार उचरे ॥७॥

तब सांय संध्या हो रही रवि पश्चिम दिशि आ गए ।

मुख मुझाए सीय रघुवर वृक्ष छाया में खड़े ॥८॥

प्रीतम कर सों धनुष लिया आदर सो निमिनन्दनी ।

फूल व्यंजन से पवन करि सानुज नाथ का श्रम हरे ॥९॥

स्वामिनी कर कमलों में हिम से भी ठण्डक बढ़ी ।

ताप ग्रीष्म का मिटा अंग अंग आनंद अनुसरे ॥१०॥

बार बार पंखा करन से प्रिया मुख पसीन पिय लखा ।
मानो झुकी कोमल लता से सलिल कण भूमी गिरे ॥११॥
श्रीराम बोले लाल लक्ष्मण जल बांबलीं से लाइये ।
फिर पकड़ विश्राम दिया श्रीजानकी को रघुवर ॥१२॥
पिया पाणि पद्म के परस से प्रिया रोम रोम प्रसन्न भए ।
सच्चिदानंद रस मगल भई श्रीस्वामिनी तह अवसरे ॥१३॥
गरीबि श्रीखण्डि गीत गाती सिय रघुवर के प्रेम के ।
युगल लीला माधरी नित्य हृदय मन्दिर में फुरे ॥१४॥

(43)

बोली स्वामिनि प्राण जीवन नभ उदय चन्द्रमा हो रहे ।
पूर्व गिरि पर पद्म मणि ज्यों वैसी उपमा यह लहे ॥
ठण्डी किरण से अनुसूया नंदन निज स्वभाव दिखलाते हैं ।
नलिनी वल्लभ स्वप्रकाश से सुधा कण वर्षाते हैं ॥
देवर लक्ष्मण नांही दीखते क्या अकेले ही गए ।
प्रभू ने कहा मेरी प्राण प्रिया वह जल लेकर आ रहे ॥
भूख भी तो लग रही थी कंद मूल फल भोजन किया ।
फूल शैय्या पर शयन कर नींद को फिर सुख दिया ॥

रजनी बीती कुशल से रवि आगमन तैयारी भई ।
प्राची दिशा निज स्वामि रवि हित लाल दुलहनि बन गई ॥

रंग बिरंगी कमल खिले तांपे मधुप मंडराने लगे ।
मानो योग्य शिष्यों को सतिगुरु प्रणव मंत्र सिखलाने लगे ॥

भोर भयो लखि श्रीरघुवर ने कहा प्रिया अब छोड़ो शैय्या ।
दात्यूह की सुन मधुर बानी भो पुत्र पुत्र कह टेरती मैया ॥

कोकिल बोली आई अयोध्या त्रिभुवन जय लक्ष्मी वाली ।
सिय राम लखण की सुखकारी प्रेम सुधा की भरी प्याली ॥

आनन्द मग्न प्रभू लौट आए अपने अयोध्या धाम में ।
नभ धरणि बाजे नगारे मधुर स्वर अभिराम में ॥

झमि झमि झमि शंखो की घ्वनि घुमरि घुमरि भेरी बाजे ।
अवध की शोभा विलोकत पुरी अमरावती लाजी ॥

जय सियावर राम की चारों ओर से गूंजन लगी ।
निज प्रभू का आगमन लखि सब प्रजा आनन्द में पगी ॥

दोहा : निरिख अवध आनन्द निधि बोले श्रीरघुनाथ ।
देखि लखण अवध पुरी जेहि सुर मुनि नावत माथ ॥

आई अवध सुहानी है ।

देखो प्रिया लक्ष्मण, मोद भरी ये मम रजधानी है ॥

यह सरयू सरिता बह रही है बह रही है ।

सुरसरि से अधिक शोभा लह रही है लह रही है ॥

तरल तरंगो में खग खेलें मनमानी है ॥१॥

विष्णु नयन प्रगटी सरयू मैया सरयू मैया ।

सब रघुवंशियों की मंगल दैया मंगल दैया ।

प्रभू सिर सीमान्त मणी अयोध्या सुख सानी है ॥२॥

गगन चुम्बी देखो ये मन्दिर ये मन्दिर ।

जहां बृजत थे पिता नरेन्द्र पिता नरेन्द्र ।

करो वन्दन शीष झुकाइ जोड़ के दोऊ पानी है ॥३॥

गुरु वशिष्ठ सहित भाई भरत भाई भरत ।

बाजे बजाय मंगल गान करत गान करत ।

सुर सहिचरि चंवर दुराय गाती मीठी बानी है ॥४॥

अत्र अम्बीर छिड़की है गलियां है गलियां ।

सुर वर्षाय रहे फूल कलियां फूल कलियां ।

बहती त्रिविध समीर बहु सुगंधि समानी है ॥५॥

घनघनघन बजती शंख ध्वनी शंख ध्वनी ।

करते वेदों का गान रिषी मुनी रिषी मुनी ।

रहो प्रसन्न सिय रघुवीर रक्षक तेरा शम्भु भवानी है ॥६॥

गली गली सुन्दर नारि घूम रही घूम रही ।

दे दे मधुर आशीश झूम रही झूम रही ।

ढका धूप धूम्र से नभ रवि किरण छिपानी है ॥७॥

जोर से सब कहते जै श्रीराम जै श्रीराम ।

सती शिरोमणि जै सिय स्वामिनि जै सिय स्वामिनि

जै जै लक्ष्मण लाल कहें सब उमगानी ॥८॥

दर्शन हित युवती द्वार खड़ी द्वार खड़ी ।

सब करत परस्पर बात प्रेम भरी प्रेम भरी ।

सिन्धु गंग ज्यूं सियाराम का मिलन अति महानी है ॥९॥

नभ मण्डल से देव पुष्प बरसें पुष्प बरसें ।

दिग्गज मद पानी अलियों आकर्षे आकर्षे ।

मैथिलि राघ पद में आकर मंडरानी है ॥१०॥

राजपथ पै धीरे पांव दिये पांव दिये ।

रतन जटित महलात में प्रवेश किये प्रवेश किये ।

राम जननी नीराजन कर आनन्द उकसानी है ॥११॥

वैदेही नित्य वल्लभ की जय हो की जय हो ।

रस आत्मक अवधरमण की जय हो की जय हो ।

कोटि इन्द्र से अधिक विलास पूरण सुखदानी है ॥१२॥

चामीकर चीरधारी की जय हो की जय हो ।

धरा नन्दिनी विनोदकारी की जय हो की जय हो ।

जयजय सीय रघुवीर कही कोकिल कल्याणी है ॥१३॥

(45)

राज सिंहासन बैठि युगलवर करते है नित्य विहार उदारा ।

नित नित आनन्द उमगि रहे और होत नये नितु मंगलाचारा ।

एका दिना गये सरयू के तीर सिया रघुवीर परम सुकुमारा ।

बकुल तामालों की छाया सुहावन बैठे हैं आय निकुंज मंझारा ॥

वृक्षों की पंकति बीच बहे सरिताओं शिरोमणि सरयू की धारा ।

नीले नीले नैनों समान है वह कमल खिले अरु भंवर गुंजारा ।

जहां तहां रही फूली कुमोदिनी लखि मुस्काते हैं युगल कुमारा ।

धन्य सरयू है तेरा जस पावन वेद पुराणनि मंहि विस्तारा ।

मनुष की तो है बात क्या कोई व्यंग पशूं सरयू तन त्यागे ।

ब्रह्मा ओ रुद्र कुबेर सबै सुर तां पद वन्दन को अनुरागे ।

पापी ओ तापी भी होहिं पुनीत सदा रघुवीर रससामृत पागे ।
सरयू के तीर बसे जो सुधीर मिटे भव पीर भये बड़ भागे ॥

(46)

निश दिन तुम्हें ध्याऊं मेरी सरयू मैया ।

पतित तारणी अधम उधारणी तव रज शीश चढ़ाऊं । मेरी

श्रीहरि नैन विलास कारणी रघुवंशिन की सुख विस्तारणी ।

अति ही अनूपम महिमा वाली कृपा प्रसाद तेरा पाऊं ॥१॥

साकेत स्वामिनि जनक नन्दनी श्रीवैदेही जगत वन्दिनी ।

तिन पद पद्मनि लोट पोट हो जीवन सफल बनाऊं ॥२॥

विमल विपिन जंहि युगल विहारी करते लीला मुनि मन हारी ।

उनको देखि देखि गद्गद् हो मधुर मधुर गुण गाऊं ॥३॥

डार डार पै कूद कूद कर मोद प्रमोद हृदय में भरि भरि ।

जय जय जनक नन्दिनी स्वामिनि जय श्रीजानकी रट लाऊं ॥४॥

श्रीमैथिलि पद अधीन जे दासी और ये श्रीखण्डि चरण उपासी ।

गावें गावें हंसे हंसावे नच नच प्रिया रिझाऊं ॥५॥

चिर जीवी हरि हर बृह्मादी विभक्त आसक्त हैं देव अनादी ।

विभव परे सीय राम प्यारे तिनका मंगल मनाऊं ॥६॥

श्रीवैदेही वल्लभ रामा द्वभुज धनुर्धर है सुखधामा ।

नित्य किशोर वयस करुणामय कृपा कोर तंहि चाहूं ॥७॥

जंहि श्रीराम प्रिया प्रकाशे सिय देवी प्रभाव विकासे ।

रवि शशि की भी गति नाहीं उन कनक महल में जाऊं ॥८॥

वहीं सिहांसन युगल विराजें भक्त कल्पतरु रसिकनि राजें ।

केवल प्रेम पूर्ण वह धामा तहां न पुरुष का ठाऊं ॥९॥

नारी भाव से युक्ति रसिक जन अर्ध निमेश को धरे ध्यान मन ।

युगल की सेवा भक्ति लहे वह यही सिद्धांत सुनाऊं ॥१०॥

परा शक्ति अहिलादिन देवी वेद सुता जेहि सुर मुनि सेवी ।

वह मेरी परम आराध्य स्वामिनि चरणनि चेरी कहाऊं ॥११॥

वह मेरी हर्ष हुल्लास निधी है वह मेरी जीवन प्रेम सिधी है ।

क्षण भर उन बिन रह न सकूं मैं सेवा कर हुलसाऊं ॥१२॥

सत्य उपदेशा सतिगुर प्यारा श्रीअविनाश चंद्र जगत उज्यारा ।

तिनकी शिष्या गरीबि श्रीखण्डि मैं पल पल प्रेम बढ़ाऊं ॥१३॥